हाँ, संभव है तनावमुक्त पत्रकारिता

कुछ विषय ऐसे जिनके सम्बन्ध मं द्वंद्व रहता है। मसलन, ब्रह्मचर्य होना तो चाहिए, पर हो नहीं सकता। ऐसा ही एक विषय है, क्या तनावमुक्त पत्रकारिता हो सकती है। क्या तनवमुक्त पत्रकारिता होनी चाहिए। क्या पत्रकारिता और तनाव का नैसर्गिक सम्बन्ध है-अर्थात तनाव होना उसके कार्य का हिस्सा है। ताव के साथ पत्रकरता हो तो क्या बुराई है। तनाव अपनी जगह बना रहे, पत्रकारिता अपनी जगह होती रहे। तब भी क्या वे एक - दूसरे को प्रभावित करते हैं।

यह सवाल वलसाड में गुजरात प्रेस अकादमी और ब्रह्माकुमारीज की संगोष्ठी में उठा। संगोष्ठी का विषय ही था-तनाव मुक्त पत्रकारिता। विचार-विनिमय के लिए यह विषय क्यों चुना? इसका तो पता नहीं, पर यह विषय ऐसा जरूर है जिस पर इन दिनों विचार किया जाना चाहिए। यह एक ऐसी स्थिति है जो है और उसे नहीं होना चाहिए। यह एक ऐसा विषय है, जिसपर प्राय: सभी लोग सहमत नहीं होंगे-कहेंगे तनावमुक्त पत्रकारिता हो तो अच्छा है, पर व्यावहारिक रूप से ऐसा नहीं हो सकता।

काम को पराजित करने वाले अर्थात ब्रह्मचर्य का पालन सहजता से करने वाले लोग हो सकते हैं, यह अब अजूबा नही है। अकाम या निष्काम की सहज स्थिति हो सकती है। कठिन है, पर असंभव नहीं। ऐसे ही ईमानदारी से व्यवसाय हो सकता है-कठिन है पर असंभव नहीं। ऐसे भी प्रयोग कई लोगों ने किए हैं। तब पत्रकारिता भी तनावमुक्त हो सकती है। हमने उसे असाध्य मान लिया है, जैसा कि इस संगोष्ठी में भी एक अनुभवी वक्ता ने माना, उन्होंने कहा कि पत्रकारिता तनावमुक्त नहीं हो सकती क्योंकि तनाव उसके कार्य का हिस्सा है। भ्रष्टाचार की उजागिरी, विरोध में लिखना, समर्थ की आलोचना, सत्ता से असहमति, दिन-रात की भागदौड़ में बने रहना, सदा यह डर पालना कि ऐसा करने से क्षति हो सकती है।, द्वंद्व या तनाव के ऐसे कारण हैं, जो पत्रकारिता के कार्य में प्राय: सदा उपस्थित रहते हैं। उन्होंने उन्हीं सबका उल्लेख किया और इसी से निष्कर्ष निकाला-तनाव मौजूद रहेगा। तनाव का प्रबंधन तो हो सकता है, वह भी सब-कुछ,पर तनावमुक्त नहीं हुआ जा सकता।

दरअसल, हम प्राय: बहुत सी बातों को गड्मगडड करके अपना पक्ष रखने के आदी हो गये हैं। तनाव के सम्बन्ध में ऐसा ही है। इस विषय में सोचते हुए भी ऐसा ही लगा।जब ऐसा सोचा कि तनावमुक्त हो सकते हैं, तब व्यावहारिक कठिनाईयों को दरकिनार नहीं किया गया। उन्हें सोचा और समझा भी। जैस, जब दिन-रात, समय-असमय अधिक समय, अनुशासन के विपरित कार्य करेंगे तो दु:ख, तकलीफ तनाव होगा। पर इस स्थिति के बदलते ही यह सब ठीक भी होगा। पर, नौकरी छूटने का डर बना रहे, भयभीत मन बना रहे, गलती तो नही हो गई ऐसा सदा भाव बना रहे, तो भी तनाव होगा और वह बना भी रहेगा। पहली स्थिति के फर्क को समझेंगे तो तनाव के कारण को ठीक-ठाक समझ पायेंगे।

तनाव के सम्बन्ध में पत्रकारिता के क्षेत्र में तीन स्थितियां अनुभव की जाती हैं। एक कार्य-व्यवहार, अनुशासन के विपरीत, समय-असमय, दौड़-धूप आदि। यह परिस्थिति-जन्य और स्थिति-सापेक्ष है। कम वेतन, ज्यादा काम, काम की आलोचना आदि भी इसी के अन्तर्गत हैं। स्थिति बदलते ही यह सभी कुछ बदलता है। यह हमारे सोच, क्षमा और कौशल पर निर्भर है। दूसरा-स्पर्धा, अपने कार्य पर पूरा विश्वास न होना, आलोचना से भागना या डरना, अभाव या नौकरी छूटने के डर से कार करना आदि ऐसी बातें

हैं, जो ज्यादातर कल्पित हैं, आरोपित या अनुमानित हैं। जो हो सकती हैं, पर हैं नहीं या हैं यह स्थितिपर निर्भर है। ऐसा हो तो भी उसे क्यों भागते हैं। यह तनाव अपना ही पैदा किया है, इसे दूर करना आसान नहीं है। इसे अपनी नासमझी और कमाजेर भवनाओं ने तैयार किया है। इसे दूर भी हम ही कर सकते हैं। यह तनाव बढ़ता है क्रमशः औरविकार और बुराईयां पैदा करता है। झूठ, छल जैसे विकार इसी जन्मते और बढ़ते हैं। तीसरा है-अपनी कमजोरी, असलियत को न जानना और फिर भी वह सब करना जो इससे परे है। जानबूझकर गलत करना और उसे उचित ठहराना, अहमान्यता, बड़बोलापन, सीमाहीन खतरे और जाखिम उठाना-यूं ही। यह सब जटिल व्यवहार का परिणाम है। नकल, ढोंग, इसी के अंग हैं इसके अंग हैं इसके परिणाम पहले दोनों की तुलना में ज्यादा व्यापक ओर नुकसानदेह होते हैं। पत्रकारिता का कार्य करते हुए देखें कि तनाव भ्रष्ट्राचार को उजागर करने के कारण आता है या उसे बताने या उसके परिणाम से भयभीत होने के कारण हैं। हम तनाव को पहचाने बिना ही उससे भय खाते हैा या उसमें फंसते हैं। उसे समझते नहीं है।

पत्रकारिता तनावमुक्त होना चाहिए, उसका आशय यहाँ भिन्न है। दरअसल पत्रकारिता हितैषी सूचना एवं विचार का संवाद है। स्पर्धा, अधूरा सच, भौतिक कामनाओं की वृद्धि जटिलता, गलत छबियां, बाजार के लिए उपभोक्ता वृत्ति का विकास आदि ऐसे लक्ष्य हैं, जिनके लिए पत्रकार की मूल्य दृष्टि तथा स्वयं की वृत्ति में परिवर्तन आवश्यक है। सामान्यजन और समाज के जीवन मूल्यों से जुड़ी इन बातों के लिए कुछ इसी तरह की जीवटता, संकल्प और दृढ़ता चाहिए जैसी गांधी, विवेकानन्द या दादा लेखराज में थी। जब राजा जनक तनावमुक्त राज्य कर सकते है, शुक अवधूत होकर भी व्यवस्थित कथा कह सकते हैं। ऐसे अन्य भी कई हैं जो तनावमुक्त कार्य करते रहे हैं पर यह सब जीवन के आशय और अर्थ को समझने पर होगा, पर उससे कम नहीं।

पत्रकारिता को तनावयुक्त करना या तनावमुक्त करने का सीधा सम्बन्ध समाज को बेहतर और बदतर बनाने से है। और यह करेगा पत्रकार। तब पत्रकार का लक्ष्य, उद्देश्य और उसकी आंतरिक स्थिति कैसी होनी चाहिए। इसे यह कहकर नहीं टाला जा सकता, यह सब वायवी या अव्यावहारिक चिंतन है। पत्रकार के कार्य का प्रभाव क्या पड़ रहा है, यह पत्रकार खुद नहीं सोचेगा तो कौन सोचेगा? उसे अपनी आत्मा और उसकी शक्ति को भी अनुभव करना होगा।

जाने-अनजाने वलसाड की संगोष्ठी ने ऐसे प्रश्न को विचारने के लिए प्रस्तुत किया है जो बहुत सामयिक है। बाजार, उपभोक्तावाद, लाभ-लोभ की मूल्यदृष्टि और न्यस्त स्वार्थ कि लिए अधूरे सच के साथ की जा रही पत्रकारिता लगभग वही स्थिति पैदा कर रही है, जो एड्स, कैंसर या ऐसी ही दूसरी बिमारियो ने पैदा की है। इसे समझना, स्वीकार करना और इसका विकल्प ढूढंना भी पत्रकार का ही काम होगा।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com